पेरकी समाज

स्मरणिका २०२३

• संकलनकर्ता •

प्रकाश गणपतराव गोविंदवार

ॲडमिन - पेरकी समाज बिजनेस ग्रुप

प्रकाशक

पेरकी समाज उद्योजिका प्रकाशन

प्लॉट नं. 96, मिलींद नगर, बालाभाऊपेठ, नागपूर - 440017.

पुण्य स्मरण

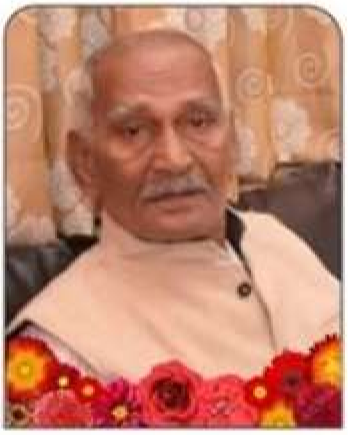

श्री रामचन्द्रजी गोपालराव सिंगतवार
ऑफिस : डी आई जी पी टी
279, मोहन नगर, नागपुर

श्री प्रभु गोपालराव सिंगतवार
ऑफिस : डिफेंस नागपुर
279, मोहन नगर, नागपुर

हमारे पिताजी **श्री रामचन्द्रजी गोपालराव सिंगतवार** और काका **श्री प्रभु गोपालराव सिंगतवार** छोटे से बड़े मोहन नगर में हुए। उस समय मोहन नगर पेरकी समाज का गढ़ था। उन्होंने अपनी युवा अवस्था में पेरकी जनसंघम संगठन के लिए काम किया था।

पेरकी जनसंघम के पहले अध्यक्ष श्री पेंटय्याजी दोरसेटवार जी हमारे पिताजी के सगे मामा थे। उस समय मोहन नगर में बड़ी संख्या में पेरकी समाज के लोग रहते थे। पेरकी जनसंघम संगठन में इस बस्ती के लोग ज्यादा सक्रिय थे। पेरकी जनसंघम संगठन में उनका योगदान ज्यादा था। यवतमाल व नांदेड जिल्हों से आने वाले अधिकांश पेरकी हमारे घर अतिथि होते थे!

हमारे पिताश्री और काकाश्री सरकारी नौकरी में थे। हम सभी भाई–बहनों को पढ़ाया। सभी अपने अपने व्यवसाय में सक्रिय हैं। उन्होंने अपना जीवन बहुत ईमानदारी और नेक नीयत से बिताया। आज इस दुनिया में हमारे पिता और काका दोनों नहीं है। हमारे पिताजी और काकाश्री को पुण्य स्मरण करते हुए विनम्र अभिवादन।

पेरकी बिजनेस ग्रुप की इस पहली पेरकी समाज स्मरणिका को सिंगतवार परिवार की तरफ से हार्दिक बधाई और शुभकामनाएं।

धन्यवाद!

भारताचे संविधान

उद्देशिका

आम्ही, भारताचे लोक, भारताचे एक सार्वभौम समाजवादी धर्मनिरपेक्ष लोकशाही गणराज्य घडवण्याचा व त्याच्या सर्व नागरिकांस :

सामाजिक, आर्थिक व राजनैतिक **न्याय** ;
विचार, अभिव्यक्ती, विश्वास, श्रद्धा
व उपासना यांचे **स्वातंत्र्य** ;
दर्जाची व संधीची **समानता** ;
निश्चितपणे प्राप्त करून देण्याचा
आणि त्या सर्वांमध्ये व्यक्तीची प्रतिष्ठा
व राष्ट्राची एकता आणि एकात्मता
यांचे आश्वासन देणारी **बंधुता**
प्रवर्धित करण्याचा संकल्पपूर्वक निर्धार करून ;

आमच्या संविधानसभेत
आज दिनांक २६ नोव्हेंबर, १९४९ रोजी
याद्वारे हे संविधान अंगीकृत आणि अधिनियमित करून स्वतःप्रत अर्पण करीत आहोत.

- डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर

पेरकी समाज स्मरणिका २०२३

प्रकाशक
पेरकी समाज उद्योजिका प्रकाशन
प्लॉट नं. 96, मिलींद नगर,
बालाभाऊपेठ, नागपूर - 440017.

संकलनकर्ता
प्रकाश गणपतराव गोविंदवार
प्लॉट नं. 96, मिलींद नगर,
बालाभाऊपेठ, नागपूर - 440017.
मो. 9096170712

प्रथम आवृत्ती
1000 प्रतियां
1 ऑक्टोबर 2023

मुद्रक
पंचशील ग्राफीक्स
137, मिलींद नगर, बालाभाऊपेठ,
नागपूर - 17. मो. 9822728026

किंमत
रूपये 100/-

व्यक्तिगत वितरण के लिये
संपादकीय अधिकार सुरक्षित है।
विज्ञापन निःशुल्क है।

अनुक्रमणिका

प्रकरण 1 : **संपादकीय प्रस्तावना** 03
प्रकाश गणपतराव गोविंदवार

प्रकरण 2 : **मनोगत** 06
श्री भगवानजी नारदेलवार
माजी अध्यक्ष पेरकी जनसंघम् विदर्भ

प्रकरण 3 : **अध्यक्षीय भाषण** 09
श्री प्रकाश धर्माजी एंचीलवार
अध्यक्ष पेरकी जनसंघम् विदर्भ

प्रकरण 4 : **सचिव मनोगत** 12
श्री रमेश अंकतवार
सचिव पेरकी जनसंघम् विदर्भ

प्रकरण 5 : **''पेरकी समाज : 13
काल आणि आज''
या ग्रंथाच्या अंतरंगात**
- डॉ. राम बोडेवार, साहित्यकार

प्रकरण 6 : 27
**पेरकी समाज बिजनेस ग्रुप
निःशुल्क विज्ञापन**

प्रस्तावना

द्वारा –**प्रकाश गणपतराव गोविन्दवार** नागपुर
ग्रुप एडमिन – पेरकी समाज बिजनेस ग्रुप

नुसता स्वतःच्या प्रगतीचा वेग साधने म्हणजे प्रगति नव्हे..... स्वतः सोबत समाजचं हित साध्य करणे म्हणजे....खरी प्रगति होय.
एका महापुरुषचा कथन.

खुद की प्रगति यानी प्रगति नहीं है। अपने प्रगति के साथ दूसरों की प्रगति में सहायक बनना ही सच्ची प्रगति है।
एक मेकांना सहाय करू... अवधे धरू सुपंथ।

पेरकी समाज बिजनेस ग्रुप इस भावना से प्रेरित है। यह एक समूह का प्रयास है। प्रगति की ओर ले जाने वाला प्रयास है। रोटी, बेटी के व्यवहार के लिए समाज जरूर बना है। समाज को व्यावसायिक क्षेत्र में भी जोड़ा जा सकता है। संबंधों को मजबूत किया जा सकता है। एक दूसरे के व्यवसाय की जानकारियों का उपयोग समाज के बेहतरी और उन्नति के लिए भी किया जा सकता है। इसके लिए समाज को नियंत्रित करने की आवश्यकता नहीं है। न ही कोई विचार थोपने की। समाज को किसी अच्छे उद्देश्य के लिए प्रेरित करना पर्याप्त है।

पेरकी समाज बिजनेस ग्रुप , बिजनेस के स्तर पर एक दूसरे से परिचित होने का अवसर प्रदान करता है। पेरकी समाज स्मरणिका पुस्तक इसकी एक कड़ी है। व्यवसाय के जरिए एक दूसरे को जोड़ने की कोशिश है। इसकी अगली कड़ी में वेबसाइट, डिजिटल और प्रिंट फार्म में एक बिजनेस डायरेक्ट्री प्रकाशित करना रहेगा।

पेरकी समाज अगर व्यापार व्यवसाय की बात करे तो आश्चर्य नहीं होना चाहिए। बिजनेस हमारे खून में हैं। पेरकी समाज का संबंध आदिम काल से वाणिज्य व्यापार व्यवसाय से रहा है। परशुराम के डर से क्षत्रिय धर्म को छोड़ कर पेरकी समाज ने व्यवसाय व्यापार अपनाया था। जूट पटसन की चीजें बना कर, बेचने का व्यवसाय किया। इसलिए भी इस समाज का नाम पेरकी पड़ा है। जैसे कि प्राचार्य डॉ. राम बोडेवार जी ने अपनी किताब में लिखा है। हम अपने बाप–दादा के मुंह से भी यह सुनते आए हैं।

आज के युग को जानकारियों का युग यानी इनफॉरमेशन एज कहते हैं। यह संसार जानकारियों से भरा है। इस जानकारियों के युग में पेरकी समाज के बारे बहुत कम जानकारी है। गूगल और जनसामान्य में पेरकी समाज की कोई खास पहचान नहीं है। प्राचार्य डॉ. राम बोडेवार जी ने एक बड़े ग्रन्थ की रचना की है। 'पेरकी समाज काल आणि आज' के जरिए पेरकी समाज के बारे में बहुत ही विस्तृत जानकारी दी है। पेरकी समाज स्मरणिका पुस्तक के जरिए इस जानकारी को संक्षेप में आप तक पहुंचाने की कोशिश की जा रही है। ताकि आप वर्तमान की पीढ़ी को संस्कारवान बनाने में मदद कर सकें। उसे अपनी जाति के विषय में जानकारी हासिल

हो सके।

प्रत्येक समाज को अपनी जाति के बारे में जानना आवश्यक है। यह मुझे तब महसूस हुआ, जब कास्ट वैलिडिटी के समय मुझे अपने पेरकी समाज के बारे पूछा गया था।

मान्यवर कांशीराम जी का आंदोलन मंडप कमीशन के लिए। पूर्व प्रधानमंत्री मंडल मसीहा विश्वनाथ प्रताप सिंह की मेहरबानी कि मंडल आयोग की सिफारिशें लागू करनी पड़ी। ओबीसी आरक्षण पेरकी समाज को मिला। तब पेरकी समाज के कई लोग डॉक्टर और इंजीनियर बनने लगे। उच्च सरकारी पदों पर भर्ती होने लगे। पेरकी समाज में प्रगति दिखने लगी है।

इस बीच कुछ लोगों ने स्वयं रोजगार की राह पकड़ी। अपने–अपने काम धंधे, व्यवसाय शुरू किए। एक पीढ़ी ने मेहनत की। दूसरी पीढ़ी को जमा जमाया धंधा मिला। व्यवसायी होने का यही फायदा हैं। इस निजीकरण के युग में स्वरोजगार, धंधा, व्यवसाय के सिवाय दूसरा कोई पर्याय नहीं है।

वर्तमान में सोशल मीडिया के युग में समाज सिर्फ रिश्तेदारों तक सीमित नहीं है। उससे भी बाहर जाकर समाज में दोस्ती और मित्रता का रिश्ता कायम होने लगा है। इस तरह से समाज में दायरा बढ़ने लगा है। समाज के अंदर एक नये समाज का जन्म होने लगा है। इस तरह पेरकी समाज में दोस्ती और मित्रता की वजह से जान–पहचान और लगाव बढ़ने लगा है। किसी के घर या कार्यक्रम में नहीं जा सकें, तो भी लोग फोन करके हालचाल पूछने से चूकते नहीं है। फुरसत के जमाने में यह सुविधा नहीं थी। इसका फायदा आज लोग उठा रहे हैं।

प्रश्न है कि इन सब माध्यमों से समाज को जोड़ने में कहां तक मदद मिलेगी?

सोशल मीडिया के माध्यम से समाज की जरूरी जानकारियां मिलने लगी है। लोग आवश्यक मदद और खबर प्राप्त करने लगे हैं। समाज में जुड़ने वाली शादियां समाज में जुड़ने लगी है। समाज के लोग रिश्तेदार से ज्यादा एक दूसरे के मित्र बनने लगे हैं। सोशल मीडिया पचास पार लोगों को जोड़ने का सशक्त माध्यम बन गया है। फिर भी पेरकी समाज के इतिहास और संस्कृति के बारे में जानकारियों का अभाव है।

हमारी जाति और धर्म के बारे में जानकारी परंपरा से प्राप्त होती आयी है। फिर भी वर्तमान की पीढ़ी को यह जानकारी नहीं पहुंचाई गई है। इसलिए अपने बच्चे पूछते है कि हम कौन–सी जातियों के आसपास के हैं। तेली, माली, कुनबी या तेलुगु भाषी कोमटी ? इस बात का उत्तर देने के लिए पेरकी समाज के पास कोई लिखित साहित्य नहीं था। बहुत समय बाद एक ग्रन्थ उपलब्ध हुआ।

पेरकी समाज के बारे में संपूर्ण जानकारी प्राचार्य डॉ. राम बोडेवार की ३५० पृष्ठों वाली किताब से प्राप्त हुई। उन्होंने अपने जीवन का अधिकांश भाग पेरकी समाज के बारे में जानकारी प्राप्त करने में लगाया। उनके शोधकार्य की वजह से 'पेरकी समाज काल आणि आज' किताब एक बड़े ग्रन्थ के रूप में प्राप्त हुआ।

डॉ बाबासाहेब आंबेडकर ने भी अपनी जाति के बारे में एक किताब लिखी थी

, जब उनके महार जाति में न के बराबर शिक्षित लोग थे। उस किताब का नाम है– 'शुद्र पहले कौन थे?'

उस किताब के अनुसार पिछड़े, अति पिछड़े वर्ग के लोग हारे हुए क्षत्रिय थे। जो वर्ण व्यवस्था में सबसे पीछे ढकेल दिए गए थे। आदिवासी समुदाय को जंगल में भगा दिया गया था। इस तरह से मनुवादी ब्राह्मणवादी व्यवस्था में एक नई जाति व्यवस्था का जन्म हुआ था, जो बदस्तूर जारी है।

मैंने अपने पेरकी समाज के बारे में अपने दादा जी श्री महादेव डोमा गोविंदवार से कुछ सुना था। पेरकी मूलतः क्षत्रिय कौम है। वह लड़ाकू कौम है। वह लड़ने के लिए पैदा हुई है। भगवान परशुराम की वजह से पेरकी लोगों को अपनी जाति बदलना पड़ी थी। कारण परशुराम ने क्षत्रिय जाति को पूरी तरह से खत्म करने की कसम खाई थी। इसलिए क्षत्रिय जाति ने अपनी जाति का नाम और व्यवसाय बदला। भगवान परशुराम ने इस तरह से क्षत्रिय जाति को अभय दिया। तब से भगवान परशुराम पेरकी समाज के आराध्य देव बन गए। भगवान परशुराम की मां पेरकी जाति यानी क्षत्रिय जाति की थी। मां के हत्यारे के नाम से भी परशुराम की पहचान है। ऐसा मेरे दादा को उनके पिता पेरका सांवगी निवासी डोमा हनुमंत राव गोविंदवार ने बताया था। हमारे पास ज्ञान इसी तरह से पुरखों के जरिए पहुंचा है।

दूसरी महत्वपूर्ण जानकारी मुझे मेरे मामा श्री अनंतराम तामसेठवार जी (बालाघाट निवासी) से मिली थी। उनके अनुसार महाराष्ट्र और आंध्र प्रदेश में पेरकी समाज वैनगंगा के किनारों के गांवों में फैला है। कारण पेरकी समाज आदि काल से पटसन, जूट के धागे, रस्सी और कपड़े बनाने के काम में था। जूट पटसन के धागे निकालने के लिए पानी की जरूरत पड़ती है। इसलिए पेरकी समाज वैनगंगा नदी और दूसरे नदियों के किनारों के गांवों में ज्यादा बसा है। यह भी बात सही है। बाद में पेरकी समाज का स्थलांतर शहरों की ओर हुआ।

डॉ. राम बोडेवार की किताब 'पेरकी समाज आज और कल' के संदर्भ से आगे की बात।

पेरकी समाज में एक व्यक्ति ने अपने जीवन का बहुत सारा समय एक शोध कार्य के लिए दिया। पेरकी समाज के इतिहास की खोज की। उनके इस कार्य को इस संक्षिप्त किताब के जरिए आगे बढ़ाया जा रहा है। इस पुस्तक में प्राचार्य डॉ. राम बोडेवार का अमूल्य योगदान है। सभी फोटो उनकी किताब से लिए गए हैं। इसके लिए उनका विशेष आभार और धन्यवाद।

इसके साथ नागपुर के मोहन नगर निवासी श्री मितेन रामचंद्र सिंगतवार जी का अमूल्य योगदान इस पुस्तक को छपवाने में है। उन्होंने अपने पिता की पुण्य स्मृति में इस किताब को छापने में मदद की है।

ज्ञान और अज्ञात लोगों का भी धन्यवाद और आभार व्यक्त करता हूं। एक छोटी सी किताब के जरिए सभी को न्याय नहीं दिया जा सकता है। फिर भी एक कोशिश की गई है। कुछ महत्वपूर्ण जरूर छूट जाता है। पेरकी समाज स्मरणिका पुस्तक आपको अनेक शुभकामनाओं के साथ पेश है। धन्यवाद।

मनोगत

- श्री भगवानजी नारदेलवार
माजी अध्यक्ष पेरकी जनसंघम् विदर्भ

माझ्या सर्व पेरकी बंधु आणि भगिनींना माझे विनम्र अभिवादन! मित्रहो सन 1992 साली पेरकी जनसंघम् विदर्भ या संस्थेच्या अध्यक्षपदी एक मताने माझी निवड झाली होती. त्यावेळेस आपल्या संस्थेच्या बँक खात्यामध्ये काहीही शिल्लक नव्हती म्हणजे रू. 100 ते रू. 150 पर्यंत असतील आणि संत इस्तारी महाराज या नावाने यवतमाळ येथे वसतीगृह आहे. त्या वेळेस वसतीगृहाची दयनीय अवस्था होती. इलेक्ट्रीक वायरिंग खराब झालेली होती आणि पेंटींग सुध्दा खराब झाली होती. अश्या परिस्थितीत मी स्वतःचे पैशाने इलेक्ट्रीक बिल भरून लाईन सुरू केली. वायरिंग दुरूस्त केली व पेंटींग सुध्दा केली आणि वसतीगृह पुन्हा सुरू केले होते.

श्री संत ईस्तारी महाराज वसतीगृह
यवतमाळ

कालांतराने वसतीगृहाचे उत्पन्नातून वरील संडास बाथरूम व बैठकीकरिता रूम आणि हॉल असे बांधकाम केले. त्यानंतर पांढरकवढा येथे वसतीगृह किंवा समाज भवनाकरिता 7 ते 8 हजार फुटाचा प्लॉट सुध्दा खरेदी करण्यात आला आणि आता नागपूर गोरेवाडा येथे 12000 हजार फुटाचा प्लाट खरेदी करून पेरकी समाज सांस्कृतिक लॉन (सभागृह) लोक वर्गणीतून निर्माण करण्यात आला आहे. एवढी जंगम मालमत्ता माझ्या कार्यकाळात निर्माण करण्यात आली.

दर वर्षी गुणवंत विद्यार्थ्यांचे सत्कार व वधु वर परिचय सम्मेलन घेण्यात आले. 2020 ते 2022 या काळात कोरोनाच्या प्रकोपामुळे गॅप पडलेली होती. आता यावर्षी नागपूर येथे संमेलन होऊ घातलेले आहे. या अगोदर 1992 आधि 1975 साली नागपूर येथे अधिवेशन 1978 मध्ये मा. नानाभाऊ येंबडवार मंत्री झाल्यामुळे त्यांचा सत्कार व 1983 मध्ये सावंगी येथे अधिवेशन घेण्यात आले होते. परंतु समाजात जागृती निर्माण करण्याकरिता प्रत्येक जिल्ह्यात आष्टी तालुक्यातील कुणघाडा ठाकरी जवळ जिल्हा गडचिरोली येथे मेळावा, सोनी भंडारा जिल्हा येथे मेळावा, नागपूर, कामठी पांढरकवडा, घाटंजी, यवतमाळ व डोंगरगाव ता. आरमोरी जि. गडचिरोली व गडचिरोली येथे मेळावे घेण्यात आले.

या आधी यवतमाळ व नागपूर येथील लोकांनाच आपली समाजाची संस्था आहे असे वाटत होते. परंतु गावोगांवी जिथे आपले समाज बांधव राहतात. त्यांना जागृत करण्याकरिता वर लिहिल्याप्रमाणे अलग-अलग ठिकाणी विद्यार्थ्यांचा सत्कार समारंभ व

परिचय मेळावे घेण्यात आले.

तसेच श्री मदनराव जिद्देवार सचिव यांच्या पुढाकाराने पांढरकवडा येथे 1993 साली सामूहिक मेळावा घेण्यात आला तसेच 1998 साली डोंगरगांव (भुसारी) ता. आरमोरी, जिल्हा गडचिरोली येथे कै. दिवाकरराव पेट्टेवार व डॉ. महेश कोपूलवार यांच्या सहकार्याने भव्य सामूहिक मेळावा घेण्यात आला होता त्यानंतर समाज बांधवांना वेळोवेळी आवाहन करून सुध्दा सामूहिक मेळाव्यांचे वातावरण निर्माण झाले नाही. हे सर्व माझ्याच कार्यकाळात झाले आहे. सन 2000 साली नागपूर येथे दोन दिवसाचे भव्य अधिवेशन सुद्धा घेतले होते. त्यामुळे समाजात नव चैतन्य निर्माण झाले होते.

पेरकी समाज सांस्कृतीक सभागृह (लॉन), नागपूर

समाजात सर्वांगाने अभ्यास होणे, विचार होणे, त्यावर चिंतन करणे व चिंतनातून समाजाला समाज उन्नती करण्याकरिता योग्य दिशा देणे ही काळाची गरज आहे. सर्वप्रथम हुंडा पध्दत बंद व्हायला पाहिजे. हुंडा देणे-घेणे कायद्याने गुन्हा आहे. तरी पण चोरून लपून काही लोक कर्ज घेऊन शेतीवाडी विकून आपली मुलगी सुखी झाली पाहिजे. या विचाराने सरकारी नोकरी करणारा, डॉक्टर, इंजिनिअर किंवा भरपूर पॅकेज असलेला मुलगा निवडून हुंडा देतात व ते घेतात. परंतु ज्याला भरपूर पगार आहे व चांगली नोकरी आहे. त्यांने हुंडा घेऊ नये. आपल्या समाजामध्ये लग्न करण्याची पद्धत बदललेली आहे. दिखावा करण्याची पध्दत अधिक झाली आहे. त्यामुळे आपलेच आर्थिक नुकसान होते. सामूहिक मेळाव्याची जर पद्धत निर्माण झाली. तर हुंडा घेण्याची पद्धत, देण्याची पध्दत तसेच दिखावा करून पैसा बरबाद करण्याची पध्दत आपोआप बंद होईल व सर्वांचा वेळही वाचेल.

आपल्या समाजाचा सर्वांगीण विकास व्हावा: या उद्देशाने आम्ही सन 2004 ते 2008 पर्यंत सतत विधान भवनावर नागपूर येथे हिवाळी अधिवेशनामध्ये सर्व समाजबांधवाना जागृत करून मोर्चे काढलेत. आपल्या समाजाला भटक्या जमातीत सामाविष्ट करण्याकरिता महाराष्ट्र सरकारचे लक्ष वेदण्याकरिता सतत पांच वर्षे गावोगावी प्रत्येक जिल्ह्यात जाऊन, सभा घेऊन व सर्वांना एकत्र करून मोर्चाचे आयोजन होते. भव्यदिव्य मोर्चे समाज बांधवांनी काढल्यामुळे महाराष्ट्र सरकारनी याची दखल घेवून समाजकल्याण आयोगाला पेरगी समाजाचे सर्वे करण्यास भाग पाडले होते व आयोगामार्फत सर्वे करून सरकारला अहवाल सुध्दा सादर केला होता. पण त्या अहवालामध्ये आपली जात भटक्या जमातीच्या निकषामध्ये बसत नाही; असे स्पष्ट झाले होते. त्यामुळे आपण थांबलो.

समाज हिताचे कामे करतांना कळत नं कळत चुका होत असतात. जी व्यक्ती समाजाकरिता काहीही करत नाही त्यांच्या हातून चूक होऊच शकत नाही. जो करतो त्यांचे हातून चूक होण्याची शक्यता नाकारता येत नाही. याचा अर्थ अध्यक्षांनी काहीच केले नाही असे होत नाही, मी समाजाकरिता गेले 30 वर्षे भरपूर वेळ आणि स्वतःचे लाखो रूपये खर्च

केलेले आहेत. याची समाजाने नोंद घ्यावी. या करिता सर्व कार्यकारिणींची कस लागते, तसे झालेले नाही.

आज आपला समाज शैक्षणिक व सामाजिक दृष्ट्या प्रगत झालेला आहे. पूर्वी बोटावर मोजण्या इतके लोक डॉक्टर, इंजिनीअर, क्लर्क, ग्रामसेवक, पटवारी, शिक्षक, प्राध्यापक होते. पण आज शैक्षणिक प्रगतीमुळे असंख्य लोक दिसतात. उद्योगधंद्यामध्ये सुध्दा गुंतलेले आहेत. कोणी बिल्डर, उद्योजक म्हणजे कारखानदार, लहान मोठे दुकाने, व्यापार करणारे लोक तयार झाले आहेत .आणि ही काळाची गरज आहे. कारण सरकारचे धोरण बदललेले आहे. प्रत्येकाला नोकरी सरकार देऊ शकत नाही.

पेरकी समाज सांस्कृतीक सभागृह (लॉन), नागपूर

गेल्या तीस-चाळीस वर्षात मुलगामी बदल समाजात झाल्याने समाजाबद्दल विचार करतांना समकालिण समाजकारण, राजकारण यामध्ये ढासळलेली मूल्य व्यवस्था व तिची अंमलबजावणीची संदिग्धता या सर्व गोष्टीचा उहापोह होणं अपरिहार्य आहे. अनेक विध आयामाच्या मिश्रणातूनच समाज प्रगतीचे स्थान ठरते. सत्य बोलणारा नेहमी सुखात राहतो पण खोटे बोलून समजून न घेता समाजाचे हिताचे काम करणाऱ्यांचा खोटा प्रचार करणाऱ्याला आज जरी उसंत वाटत असेल, पण त्याला त्याचं मन सतत दुखी करण्यास मदत करते, हे नक्की!

मी समाज हिताचे काम करीत असतांना नवीन कार्यकारिणीचा चेंज रिपोर्ट वेळोवेळी जेव्हा-जेव्हा कार्यकारिणीचा बदल झाला, त्या वेळी संघटनेच्या सचिवांनी धर्मदाय आयुक्त कार्यालयाला बदल रिपोर्ट सादर केलेला होता. पण त्या कार्यालयाच्या जाचक अटी व वेळोवेळी कायद्यात होणारे बदलामुळे ते होऊ शकले नाही परंतु धर्मदाय आयुक्तांना मी स्वतः विनंती करून नवीन कार्यकारिणी निवडण्याची परवानगी मिळवली आणि त्यानुसार नवीन कार्यकारिणीची निवड करवून घेतली व नवीन कार्यकारिणींनी बदल रिपोर्ट सादर केला आहे व ते होईल. पण 1989 ते 1992 चे माझे अगोदरच्या कार्यकारिणीचे व नंतर माझ्या काळाचे सन 1992 ते 2023 पर्यंत संस्थेचे ऑडीट रिपोर्ट रेगुलर झालेले आहेत. हे मी इथे सांगू इच्छितो.

मित्रहो दिनांक 1 ऑक्टोबर 2023 रोजी नागपुरात होऊ घातलेल्या समाजाच्या कार्यक्रमाला माझ्या हार्दिक शुभेच्छा. या कार्यक्रमानिमित्त श्री प्रकाशजी गोविंदवार हे 'पेरकी समाज स्मरणिका' प्रकाशित करीत आहेत, या स्मरणिकेत माझे मनोगत व्यक्त करीत आहे.

आपल्या वडीलधारी मंडळींनी समाजासाठी जे काही केले, यात समाधान मानायला पाहिजे. व समाजातील प्रत्येक व्यक्तींनी हेवे-दावे न करता आपल्या समाजाला आर्थिक सहयोग देऊन उच्च शिखरावर नेण्याचा प्रयत्न केला पाहिजे, असे म्हटल्यास वावगे होणार नाही. 'मरावे परि कीर्ती रूपे उरावे !'

धन्यवाद!

पेरकी जनसंघम संगठन का अध्यक्षीय भाषण
पेरकी जनसंघम अधिवेशन

तारीख १ अक्टूबर २०२३ , स्थल – नागपुर

अध्यक्ष
श्री प्रकाश धरमाजी एंनचीलवार
द्वारा

पेरकी जनसंघम अधिवेशन में आए सभी मान्यवरों और समाज बंधुओं का मैं तहेदिल से स्वागत, अभिनन्दन और शुक्रिया अदा करता हूं।

इसी साल पेरकी समाज में चुनाव हुए। नये प्रतिनिधियों का चुनाव हुआ है। पेरकी समाज के लोगों ने स्वयं स्फूर्ति से चुनाव में बढ़–चढ़ कर भाग लिया। परिणाम सामने है। अधिकांश नये लोग चुने गए हैं। विदर्भ के सभी क्षेत्रों को जनसंख्या के हिसाब से प्रतिनिधित्व दिया गया है। आप सबके द्वारा मुझे अध्यक्ष चुना गया है। एक नयी और महत्वपूर्ण जिम्मेदारी दी गई है। इसके लिए मैं आप सबका बहुत आभारी हूं और धन्यवाद देता हूं।

मुझे और मेरी कार्यकारिणी को पेरकी समाज ने चुना है। कुछ नयी जिम्मेदारियां भी दी हैं। उन्हें याद करना चाहूंगा।

उसमें से प्रमुख समाज को एक जुट रखने की जिम्मेदारी है। पेरकी जनसंघम संगठन के माध्यम से हम सब मिलकर समाज को एकजुट रखने की कोशिश करेंगे। एक दूसरे के सुख–दुःख में भाग लेंगे। समाज में एक दूसरे की जान–पहचान बढ़ाने में मदद करेंगे।

इस समय पेरकी समाज में जनगणना कराई जा रही है। प्रत्येक व्यक्ति और परिवार के सदस्यों की जानकारी जुटाई जा रही है। शिक्षा–दीक्षा और विवाहित और अविवाहितों एवं व्यवसाय की भी जानकारी जुटाई जा रही है। नाम, पता, मोबाइल नंबर जैसी महत्वपूर्ण जानकारियां जुटाई गई हैं। इसी साल पेरकी जनसंघम इन सब जानकारियों को मिला कर एक डायरेक्टरी प्रकाशित करने की कोशिश करेगा।

पेरकी समाज के अंतर्गत कुछ मुख्य समस्याएं हैं। वे कौन–सी है और पेरकी जनसंघम की भविष्य की कौनसी योजना है। इसी के बारे में जानकारी देनी है।

पेरकी समाज में जो समस्याएं हैं, वे लगभग सभी समाजों में है। समस्याओं को जान कर , उनमें कुछ सुधार करने को ही समाज सेवा कहा जाता है।

जैसे नं १– बाल–विवाह, जो कि पेरकी समाज में अभी नहीं है। पहले छोटी उम्र में शादी करते थे । अब लड़कियों की शादी बड़ी होने के बाद, आमतौर पर ग्रेजुएशन के बाद करते हैं। पेरकी समाज में बाल–विवाह नहीं होते हैं।

दूसरी समस्या दहेज प्रथा की है। दहेज कानूनी अपराध है। पेरकी समाज और पेरकी जनसंघम दहेज प्रथा के खिलाफ है। फिर कुछ लोग चोरी–छिपे दहेज मांगते हैं और देते हैं। यह गलत है। खुलेआम दहेज मांगने से लोग घबराते हैं। वैसे भी पेरकी समाज में लड़कियों की तादाद घट रही है। इसलिए भी दहेज प्रथा अपने आप बंद हो जाएगी।

पेरकी समाज में भी अन्य जातियों की तरह अंतर्जातीय विवाह बढ़ रहे हैं।
पेरकी समाज के कुछ लोग कह रहे हैं कि अंतर्जातीय विवाह पर पेरकी समाज कोई भूमिका लेनी चाहिए। अंतर्जातीय विवाह बढ़ने से पेरकी समाज खत्म हो जाएगा।
आपको बताना चाहूंगा कि अंतर्जातीय विवाह के लिए भी दहेज प्रथा जिम्मेदार होती है। दहेज प्रथा को समाप्त करना होगा।

पेरकी जनसंघम बाल विवाह, दहेज प्रथा का समर्थन नहीं करता है। इनका विरोध करता है। पेरकी जनसंघम अंतर्जातीय विवाह का समर्थन नहीं करता है, लेकिन विरोध भी नहीं कर सकता है। कारण विवाह प्रणाली दो परिवारों का निजी मामला है। जाति में शादी करने के लिए कोई दबाव नहीं डाल सकता है। उसमें कोई भी संगठन हस्तक्षेप नहीं कर सकता। यह सच है कि जाति का संगठन जाति अंतर्गत विवाह पर टीका है। जाति बंधुओं की आवश्यकता विवाह के लिए होती है। उसी से रिश्तेदारी भी आगे बढ़ती है।

अंतर्जातीय विवाह से बचने और बचाने के लिए परिवारों ने अपने बच्चों को विवाह समारोह में लेकर जाना चाहिए, ताकि नयी पीढ़ी को पेरकी समाज के प्रति जुड़ाव और लगाव पैदा हो। आज भी युवा वर्ग विवाह के लिए पेरकी समाज को वरीयता दे रहा है। पेरकी समाज का एक बड़ा पढ़ा–लिखा वर्ग पेरकी समाज में ही शादी कर रहा है। कोई भी अपने जाति बंधुओं से दूर नहीं होना चाहता है। जाति समाज से दूर जाकर अकेला नहीं पड़ना चाहता है।

जब हम पेरकी समाज के गरीब तबके के पास जाते हैं। तब पेरकी समाज में बहुत से लोग पूछते है कि पेरकी जनसंघम ने पेरकी समाज के लिए क्या किया?

पेरकी जनसंघम आर्थिक रूप से बहुत संपन्न संगठन नहीं है। इसलिए अपने समाज के गरीब लोगों को आर्थिक मदद करना संभव नहीं है। इसके बावजूद पेरकी जनसंघम संगठन ने गरीब परिवारों के बच्चों के लिए यवतमाल में एक होस्टल बनाया है। यवतमाल जिले के गरीब बच्चों को इसका फायदा मिला है। हर साल पढ़ाई में होशियार बच्चों को पेरकी जनसंघम संगठन पुरस्कृत करती है। धनराशि पुरस्कार में देती है।

सबसे आखिर में महत्वपूर्ण बात कहना चाहता हूं। पेरकी जनसंघम संगठन कहां, कौन से क्षेत्र में सबसे महत्वपूर्ण योगदान देना चाहता है। पेरकी जनसंघम संगठन भविष्य में नागपुर में एक होस्टल और एक बड़ा मंगल कार्यालय बनाना चाहता है। नागपुर में पेरकी समाज के अन्य जिलों के युवा रोजगार की तलाश में आते हैं। उनके ठहरने की व्यवस्था करना चाहते हैं। इस बारे में प्रस्ताव आने पर विचार किया जाएगा। यवतमाल में भी पुराने होस्टल को तोड़कर एक नया होस्टल और मंगल कार्यालय बनाना चाहते हैं। प्रस्ताव आने पर इस पर भी विचार किया जाएगा। इनके अलावा दो जगह और भी हैं, जहां पेरकी समाज के लोग बड़ी तादाद में निवास करते हैं। उनमें से एक पांढरकवडा और दूसरा गडचिरोली शहर या

आरमोरी तहसील में संभावित है। वहां भी मीटिंग हाल के नाम से एक छोटी–बड़ी जगह की आवश्यकता है, जो कि अभी नहीं है। पेरकी जनसंघम संगठन इस बारे में भी विचार कर रहा है।

इन सभी कामों के लिए दानदाताओं की आवश्यकता है। पेरकी समाज के लोगों को अपने माता–पिता के नाम पर होस्टल और मंगल कार्यालय के लिए बड़ी राशि दान करना चाहिए। कामकाजी, व्यवसायी लोगों को भी पेरकी जनसंघम संगठन को नियमित रूप से दान देना चाहिए। ऐसे दान से ही सभी जगह पर मंगल कार्यालय बन सकते हैं। संगठन के लिए नये आय के साधन बन सकते हैं।

पेरकी जनसंघम संगठन के पास वर्तमान में कोई भी आय का साधन नहीं है। नागपुर, यवतमाल, गडचिरोली और पांढरकवडा में मंगल कार्यालय बनने से पेरकी जनसंघम संगठन के पास कुछ आय के साधन उपलब्ध होंगे। इस काम के लिए पेरकी जनसंघम संगठन प्रयासरत है। इसके लिए पेरकी जनसंघम संगठन को मजबूत बनाने की आवश्यकता है।

आप में से प्रत्येक व्यक्ति से गुजारिश है कि पेरकी जनसंघम संगठन को सहयोग करें। स्थानीय स्तर पर हर महीने कुछ प्रोग्राम करें। नागपुर जैसे भीसी शूरू करें। जन्मदिन, शादी विवाह में पेरकी जनसंघम संगठन को कुछ दान देने की घोषणा करें। सबसे महत्वपूर्ण और उपयोगी सुझाव यह है। पेरकी जनसंघम संगठन हर साल सामूहिक विवाह का आयोजन करे। पेरकी जनसंघम इसके लिए प्रयासरत हैं, ताकि पेरकी समाज के गरीब परिवारों की मदद हो सके। पेरकी जनसंघम संगठन दो बार अपने अधिवेशन में सामूहिक विवाह का सफल आयोजन कर चुका है। भविष्य में सामूहिक विवाह करने के लिए उत्सुक है। इसलिए पेरकी जनसंघम संगठन वर–वधू मेला आयोजित करने को तैयार है।

अध्यक्ष होने के नाते मैं और निर्वाचित प्रतिनिधि प्रत्येक रविवार को पेरकी समाज के गरीब लोगों के घरों में जाकर हालचाल पूछने की कोशिश करेंगे।पेरकी समाज के गरीब परिवारों की शिकायत है कि संगठन के लोग उनके पास तक नहीं पहुंचते। सिर्फ चंदा मांगने आते हैं।पेरकी समाज से भी निवेदन और गुजारिश है कि वे अपने गांव, तहसील और शहर में अपने गरीब भाइयों के संपर्क में रहें। इससे उन्हें अपनापन महसूस होगा।

पेरकी समाज से सबसे बड़ी यही शिकायत है। पहचान के लोग भी मेल जोल से दूर रहते हैं। समय नहीं होने का कारण बताते हैं। लोग बहुत ही बिजी लाइफ जी रहे हैं। फिर भी वहीं समाज मौत, मिट्टी, मैयत के लिए भी समय निकालता है। तब समाज, संगठन और जाति का महत्व पता चलता है। समाज से जुड़े रहें। जब तक हम एक दूसरे का साथ देते रहेंगे। तब तक समाज संगठित रहेगा। पेरकी जनसंघम इसके लिए प्रयासरत है।

समाज और संगठन तभी मजबूत होता है जब वे एक दूसरे के संपर्क में रहें और एक दूसरे को सहयोग करें। धन्यवाद सभी उपस्थित समाज बंधुओं का।

मनोगत

श्री रमेश अंकतवार

सचिव पेरकी जनसंघम् विदर्भ

1990 मधे नागपुर येथे युवक संगठना ची स्थापना झाली. श्री अविनाश दोरसेतवार अध्यक्ष पदी होते आणि मी कोषाध्यक्ष नियुक्त होऊन समाज कार्याची सुरुवात केली. युवक संगठनेत आम्ही गुणवंत विधार्थ्यांचा सत्कार व सामाजिक कार्य केले. 1992 साली पेरकी जनसंघमच्या कोषाध्यक्ष पदावर दहा वर्षे काम केले .

1992 पासून आज पर्यंत मी पेरकी जनसंघमचा कार्यकारी सदस्य आहो. यावर्षीच्या निवडनुकित मी जनरल सचीव पदावर माझी निवडणुक झाली. माझा मुख्य हेतू समाजहित आहे , व चांगले कार्य करत राहावे असे आहे. मी आपल्या समाज बांधवांच्या हितासाठी सदैव कार्यरत राहिल. आणि अशी आशा करते की साऱ्या समाज बांधवांनचा मला सहयोग सदैव मिळत राहील.

अनेक वरिष्ठ व बरोबरीचे सामाजिक कार्य करणाऱ्यांचे मला सदैव मार्गदर्शन व सहयोग मिळाला. मी त्या सर्वांचे आभार व्यक्त करतो.

पेरकी समाज बिजनेस ग्रुप स्मरणिका 2023 ला माझ्या कडून हार्दिक शुभेच्छा।

पेरकी जनसंघम, विदर्भ

(रजि.नं.एफ ६८१ (एन) महाराष्ट्र)

मुख्य कार्यालय :- मोहन नगर, नागपूर

नविन कार्यकारीणी २०२३

प्रकाश अंचलवार, नागपूर अध्यक्ष मो. ९३७२०२६००१	**रमेश अंकतवार** सचिव मो. ९८९०३६८८८९	**डा. शंकर मिंदेवार** उपाध्यक्ष फोन : ९९३०१३९५९७	**दशरथ वर्रेवार** कोषाध्यक्ष मो. ९३२५४०४९०१
संतोष पोतराजावर सहसचिव नागपूर विभाग मो. ९८५०३३५६७७	**राजेश्वर सामृतवार** सहसचिव भंडारा गोंदिया विभाग मो. ९४२३११४७१३	**त्यंकटेश मुद्दमवार** सहसचिव गढचिरोली विभाग मो. ९४२०११९७२६	**हिरेश्वर अक्कलवार** अधिक्षक यवतमाळ विभाग मो. ९९७०६६७७८८

※कार्यकारीणी सदस्य ※

नारायण प्यारमवार, शैलेश बतुलवार, देविदास जिड्डेवार, उमेश पायदलवार, गोपाळ दोरशेटवार, ऍड वसंता एन्चिलवार, हुंकेश्वर अंकतवार, राम काळे, राकेश बोरकुंडवार, आनंद खर्डीवार, पांडुरंग बुर्रेवार, पंकज अक्कलवार, राजू मिसेवार, शुभम तुम्मवार, संतोष अंकतवार, श्रीराम मेल्केवार, सत्यनारायण एम्बडवार, डा महेश कोपुलवार, नेताजी बापूजी अन्नपत्रावर

हुंडा घेणे, देणे बंद करा व समाजाला उन्नत करा.

''पेरकी समाज : काल आणि आज'' या ग्रंथाच्या अंतरंगात

- डॉ. राम बोडेवार
9420300139

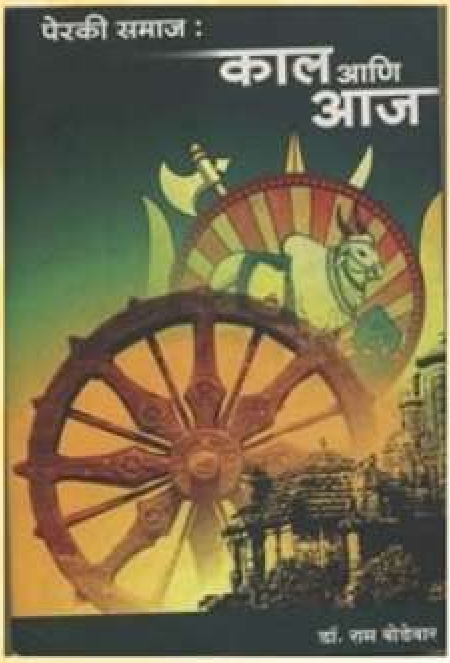

'पेरकी समाजः काल आणि आज' या ग्रंथ प्रकाशनाला (2008) सुमारे पंधरा वर्ष लोटले आहेत. या पंधरा वर्षाच्या कालावधीत समाजातील अनेकांनी सामाजिक-आर्थिक आणि शैक्षणिक दृष्ट्या महनीय प्रगती साधल्याचे दिसते. विशेषतः शैक्षणिक दृष्ट्या समाजातील अनेक तरूणांनी चांगली प्रगती केलेली आहे. पूर्वी उच्च शिक्षितांची संख्या बोटावर मोजण्या इतकीच होती. मात्र गेल्या दहा-पंधरा वर्षाच्या कालावधी मध्ये डॉक्टर्स, इंजिनिअर्स आणि प्रशासकीय सेवेतही चांगल्या हुद्यावर आपल्या समाजातील तरूणांनी आपला शिक्का उमटविण्यास सुरूवात केली आहे. विशेष म्हणजे तरूणीनीही यात नेत्रदीपक यश मिळविले आहे. शिक्षणाने त्याच्या राहणीमानात लक्षणीय बदल झालेला दिसतो. त्यांची भरारी परदेशातही यश मिळविण्याच्या दिशेने होत आहे. हे आपल्या समाजाच्या कौटुंबिक आणि सामाजिक दृष्टीने अत्यंत 'समाधान आणि अभिमानाची बाब आहे.

ग्रंथ निर्मिती आधी माहिती मिळविण्यासाठी मी, जी भटंकती केली, तेव्हाच्या समाजात आणि आताच्या समाजात शैक्षणिक-सामाजिक दृष्ट्या खूप सकारात्मक बदल दिसतो, मात्र 'तुलनेने हा बदल समाजाच्या सर्वस्तरापर्यंत पोहचलेला दिसत नाही. त्यात आर्थिक आणि शैक्षणिक विषमता ठळकपणे नजरेला पडते. बहुजनाच्या इतर जाती प्रमाणे आपल्याही जातीत बेरोजगारी आणि व्यसनाधिनता प्रकर्षाने वाढीला लागल्याचे चित्र आहे. हे वेळीच नियंत्रणात आले नाही, तर मात्र त्याचे पुढील परिणाम अत्यंत विदारक ठरतील. हे मात्र नक्की. म्हणून समाजात ऐक्य अत्यंत गरजेचे आहे. समाज बांधवाना योग्य मार्गदर्शन करण्यासाठी समाज संघटनेने पुढाकार घेणे आवश्यक आहे. आपण नेहमी वैयक्तिक प्रगतीवर भर देतो, ते द्यायलाही हवेच मात्र आपल्या सोबत इतर गरजूनाही मदत करावी, त्यामुळेच समाज प्रगती साधल्या जाऊ शकते, हे सत्य त्यांनी विसरू नये.।

ग्रंथाच्या पुढील आवृत्तीच्या दृष्टीने माझी माहिती सकंलनाची प्रक्रिया सुरू आहे. सर्व समाज बांधवांना आपल्या समाजाची माहिती सहज उपलब्ध व्हावी, या दृष्टीने माझा प्रयत्न आहे. मात्र 'पेरकी समाजः काल आणि आज' या ग्रंथातील माहितीचा सारांश रूपाने धांडोळा घ्यावा, जेणे करून समाज बांधवांना माहितीची उजळणी करून देता येईल असे, श्री प्रकाश गोविंदवार यांनी सुचविले. त्यासाठी हा लेखन प्रपंच!

पेरक्यांचे आदिपुरुष गिरीराजा आणि पत्नी जगती देवी

मित्र हो, मुळातून वाचण्याचा जो आनंद असतो तो काही औरच असतो. या ग्रंथात जातीच्या पूर्वपीठिकेपासून तर उत्पत्ती, विकास, परंपरा, आडनाव, गोत्र विषयक उत्कंठावर्धक माहिती, समाजातील गणमान्य व्यक्तीची, संघटन विषयक कार्याची, प्रतीक चिन्हाची , भाषेची, अशी जवळ-जवळ सर्वच माहिती आली आहे. म्हणून आपण एकदा तरी हा ग्रंथ जरूर वाचावा असे मी आपणांस आवाहन करतो. या माहितीचा थोडक्यात धांडोळा असा -

प्रत्येकालाच आपल्या जाती-समाजा बद्दल निसर्गताच आपुलकी असते. तिच्या बद्दलची माहिती मिळविण्याचा प्रयत्नही होतो. ज्या जातीत आपण जन्मलो, ती जात कशी आहे? ती कशी उत्पन्न झाली, तिला तेच नाव कां मिळाले? तिचा पूर्वेतिहास काय आहे? या जातीत जन्माला आलेल्या काही कर्तबगार व्यक्तीमुळे ती सर्वज्ञात होण्यास मदत होते. किंबहुना यामुळे समाजाला ओळख मिळते. अशा एक ना अनेक गोष्टी जाणून घेण्याची उत्सुकता असते. त्याच उत्सुकतेपोटी मी आपल्या जाती-समाजाची माहिती गोळा करून त्यांचा संग्रह केला. त्याला आणखी एक महत्वाचे कारणही कारणीभूत आहे. मी शिक्षणासाठी जेव्हा आपले गाव सोडून शहरात गेलो, तिथे मी पेरकी असल्याचे सांगूनही त्यांना कळत नव्हते. असेल कोणी तरी! हे म्हणतांना त्यांच्या बोलण्यातून व्यक्त होणारा तुच्छतेचा भाव मला खटकत असे. हीच खंत मला वेळोवेळी अस्वस्थ करीत असे. त्यातूनच मला जाती बद्दल माहिती मिळविण्याची ओढ अधिक दृढ होत गेली. कालांतराने माहिती मिळविण्यात मी बऱ्याच अंशी यशस्वी झालो. हे आपणांस माझे पुस्तक वाचून अगदी सहज कळेल.

पेरकी म्हणजे काय?

"पेरिका म्हणजे गोणपाट आणि त्यातून वस्तु-धान्य भरून व्यापार करणारे ते पेरिका (पेरकी)". मानववंश शास्त्रज्ञाच्या मते, सामान्यपणे एखादा समाज कोणते काम करतो, त्यावरून तो ओळखला जातो. आणि कालांतराने ते कामच त्याची जात होते. त्याला त्याच नावाने ओळख मिळते. उदा. बारा बलुतदोरांची ओळख पहा. लोहार, सुतार, धोबी, न्हावी इत्यादी. यांना मिळालेली जात ही त्यांच्या व्यवसायावरून मिळाली आहे. पेरकऱ्यांना मिळालेले नावही ते पूर्वी करत असलेल्या तागाच्या व्यवसायामुळेच मिळाल्याचे दिसते. तागाच्या तंतूपासून दोरी तयार करून त्यापासून गोणपाट, तरट, बारदाना सारख्या वस्तू तयार करण्याचे काम आपले पूर्वज करीत. एवढेच नव्हे तर तागाच्या उत्पादनापासून (शेतीपासून) त्या वस्तू तयार करून त्याची विक्री करण्यापर्यंतची पूर्ण प्रक्रिया ते पार पाडत असत. ताग बियाची लागवड-ताग-पेरकुंड-तरट आणि त्याची विक्री. त्यातल्या पेरकुंडावरून हळूहळू पेरका असे म्हटल्या जाऊ लागले. कालांतराने हीच त्यांची ओळख दृढमूल झाली. या पेरिका शब्दाबद्दल अनेक उपपत्तीही आहेत. पेरिका, पेरिके, पेरकी, पेर्रके, पेर्का, पेर्की, पेरकेवाड इत्यादी. पेरकींच्या उपजातीही आहेत. किंबहुना पेरकी हीच बलिजाची पोटजात असल्याचे आढळते. तसेच पेरकींच्या आणखी जवळच्या पोटजाती म्हणजे कैवरे, जनप्पन, पेरिका बलिजा. या सर्व जाती बलिजाच्या उपजाती-पोटजाती असल्याचे कळते.

वीरामल्ल (हरमल्लू) आपल्या बंधूसह
पेरिका शेट्टीचा वेश धारण करून देशाटनाला जातांना

आणखी एक महत्वाचा मुद्दा म्हणजे पेरक्यांना पुरगिरी क्षत्रिय असेही म्हटले जाते.

पुरगिरी क्षत्रिय म्हणून ओळखले जाणारे हे पेरकीजन जन्माने क्षत्रिय होते. आताही कोर्ट दस्तावेजामध्ये, वाङमय-लोक साहित्यामध्ये पेरकी लोकांसाठी पुरगिरी क्षत्रिय असाच उल्लेख आढळतो. आजही आंध्रमधील

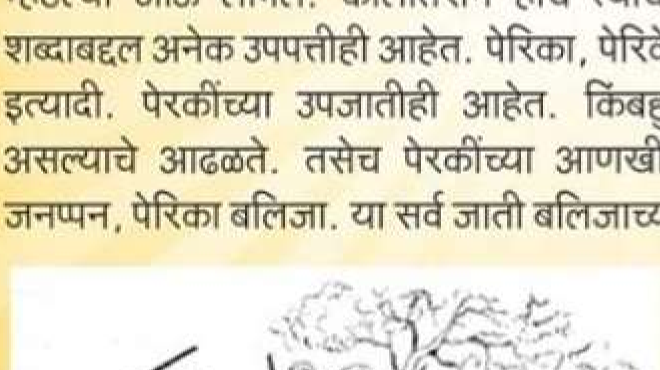

बैलावर गंता टाकून व्यापारास निघालेले
पेरिकावृत्ती धारी व्यापारी

हंसावरम्, तेटागुंटा तालुक्यातील पेरिका लोकांना पुरगिरी क्षत्रिय म्हणूनच संबोधले जाते.

पेरकी मूळ कुठले?

इंग्रज शासन काळापूर्वी मद्रास-आंध्र संयुक्त प्रांत होता आणि सद्याचा तेलंगणा प्रांत म्हणजे निजाम संस्थान मूळचे हैदराबाद संस्थान होय. याच मद्रास प्रांतात पेरिकाजन राहत असल्याचे पुरवे मिळतात. 1891 व 1901 च्या जनगणना अहवालात या जातीची स्वतंत्र नोंद केलेली आहे. या भागात पेरिका, वस्ती करून राहत होते. एवढेच नव्हे तर त्यांच्या सांस्कृतिक, सामाजिक आणि आर्थिक स्थितीची माहितीही या अहवालातून मिळते. उस्मानिया विद्यापीठाच्या ग्रंथालयात ही सर्व माहिती जनगणना अहवाल आजही सुस्थितीत सापडतात. विशेष म्हणजे कमिशनर दर्ज्याच्या शासकीय अधिकाऱ्यांनी ती दिलेली असल्याने ती अधिकृत आणि प्रमाणित समजायला हरकत नाही. इथून पेरकी जात, त्यांची संस्कृती, जीवनमान, त्यांचे उद्योग-उपजीविका इत्यादी महत्वाची माहिती उपलब्ध होते.

मग पुढे मद्रास प्रांत, तामिलनाडू झाला. निजाम स्टेटचे (हैद्राबाद संस्थान) विलिनीकरण आंध्रात झाले. निजाम स्टेट मधील नांदेड जिल्हा महाराष्ट्राला जोडला गेला. तर सद्याचा राजुरा तहसिल निजाम स्टेट मधून चंद्रपूर जिल्ह्याचा भाग झाला. अशाप्रकारे राजकीय फेरफार झाल्यामुळे पेरकीजनही तसेच विभागल्या गेले. काहीनी स्थलांतर केले. मद्रास-आंध्र-तेलंगणा आणि लगतच्या महाराष्ट्रात त्यांनी स्थलांतर केले. स्थलांतरण झाले. त्यात प्रामुख्याने तेलंगणा महाराष्ट्र सीमा भागात झालेले स्थलांतरण ठळकपणे जाणवते. यात सद्या गडचिरोली (पूर्वीचे चंद्रपूर) तील आष्टी, ठाकरी, कुणघाडा, रामसागर, चामोर्शी, हरंबा, डोंगर गाव, आरमोरी इ. गावामध्ये आपल्या मातृभाषेसह आज ही वास्तव्यास आहेत. काही भंडारा जिल्ह्यात गेले. तसेच चंद्रपूर जिल्ह्यातील चंद्रपूर, नवरगाव, सिंदेवाही, निमगाव-निफंद्रा, धाबा, सकमूर, गोंडपिपरी, भंगाराम तळोधी कोटगाव, सोबत भंडारा जिल्ह्यात पवनी, कुर्झा, भोजापूर, ईटगाव, सावरला, कोरंबी इत्यादी गावात स्थलांतरित झाले. विशेष म्हणजे भंडारा-गडचिरोलीतील काहीजण कामठी नागपूर कडे जाऊन शहरालगतच्या ठिकाणी स्थिरावले. ही स्थलांतरणाची प्रक्रिया संथ मात्र अव्याहतपणे सुरू आहे. इकडे यवतमाळ-आदिलाबाद सीमेलगतच्या अनेक गावामध्ये यांनी आपले बस्तान मांडले आहे. त्यात पैनगंगेचा काठ महत्वाचा यात चनाखा, पाटणबोरी, सुन्ना, टेंभी, सुसरी, ढोकी, वांजरी, पांढरकवड्या पर्यंत पुढे उमरी, किन्ही, रूंझा, कोची, घाटउंबा, तिकडे घाटंजी, बेलोरा, मानोली पर्यंत इकडे झरी तालुक्यात धानोरा, लिंगती, हिरापूर, मांगली, मुकूटबन इत्यादी ठिकाणी हा समाज स्थिरावला. अजूनही तेलंगणातील अनेक ठिकाणी यांचे नातेसंबंध दृढमूल आहेत.

पेरकींची भाषा कोणती?

पेरकी जनांची मूळ भाषा तेलूगू होती. पुढे स्थलांतरणांमुळे मूळभाषेत बदल घडत गेला. मुळात मद्रास-आंध्र संयुक्ततेमुळे तमिल आणि तेलूगू चा मेळ होता. पुढे मूळ तेलुगू आणि नंतरच्या निजामस्टेट मधील उर्दू भाषेचा प्रभाव पडत गेला. त्यामुळे पूर्वीची तेलुगू -उर्दू मिक्स होत गेली. आज तर आंध्र-तेलंगणातील भाषा ही फार मोठ्या प्रमाणात अपभ्रंशीत होत जाऊन तिने आपले मूळ स्वरूपच घालविले आहे. आणि महाराष्ट्रात स्थिरावलेल्या पेरकींची मूळ भाषा जाऊन त्यांनी महाराष्ट्राची मातृभाषा मराठी आत्मसात केली आहे. याही पुढे जाऊन ही मराठी, हिंदी-उर्दू आणि इंग्रजी मिक्स होऊन एका नवीनच रूपात प्रचलीत होत आहे. हे विशेष !

प्रथा, परंपरा आणि संस्कार -

आपल्या देशात अनेक संस्कृतीचा संगमच आहे. तरी विविध जातीनी आपली काही वैशिष्ट्ये जपून ठेवली आहेत. आपले जीवन सुखी-समृध्द होण्यासाठी मानवाने आपल्या आचरणात अनेक चांगल्या गोष्टींचा स्वीकार केला असला तरी, काही अनिष्ट प्रथा, अंधश्रद्धा सारख्या घातक गोष्टीच्या आहारी जाऊन, आपल्या व आपल्या समाज बांधवांच्या नाशास कारणीभूतही झाला आहे. संस्कृतीने माणूस समृद्ध व्हावा, तो माणूस म्हणून घडावा. त्याचे जीवन कल्याणकारी ठरावे, अशीच साऱ्या मानवाची इच्छा असणार. खरं तर चांगल्या प्रथा, परंपरा, रूढी ह्या समाज कल्याणासाठी उपकारक ठरणाऱ्या असतात. म्हणूनच त्याचे संवर्धन आणि संवहन करणे आपणां सर्वांचे कर्तव्यच ठरते. हीच धारणा पेरकी समाजाची ही दिसते. इतर जाती प्रमाणेच पेरक्यांनीही आपल्या जातीचा वेगळेपणा जपत, पुढच्या पिढीसाठी त्याचे जतन केल्याचे दिसते. मात्र अनेक विधीविशेष हे पुरोहिताकडून करविल्या जाणारे असल्याने व एकच पुरोहित अनेक जातीचे पुरोहित्व करीत असल्याने त्यांच्या विधीत साम्य असणे स्वाभाविक आहे. तसेच पेरक्यांच्या बाबतीत झाले आहे.

सर्वप्रथा, परंपरा, रीतीरिवाज, चालीरीती, रूढीचा विचार करता असे दिसते की, माणसावर येणाऱ्या सर्व अरिष्टांचा, दुष्ट व्यक्तींचा पाडाव करून सृष्ट शक्तीच्या विकसनाने मानवी जीवन सुसह्य व समृध्द बनविण्याचे मानवाने केलेले पध्दतशीर प्रयत्न होत. पेरकी समाजही याला अपवाद नाही. यासाठी हिंदूधर्मामध्ये षोडष संस्काराचा उल्लेख आहे. त्यात गर्भादान, पुंसवन, सीमंतम किंवा सीमंतोन्नयन (डोहाळ कौतूक), जातकर्म, नामकरण, अन्नप्राशन (घास भरविणे), चुडाकर्म (जावळे काढणे), कर्णवेध (कान टोचणे), अक्षराभ्यास, रजस्वला (ऋतुमती होणे), विवाह (विवाहविधी), सप्तपदी, गृहप्रवेश, इत्यादी संस्काराचे पालन काही प्रमाणात पेरक्यांमध्ये केले जाते. मात्र अलिकडे विधीमध्ये सरळ-सोपा मार्ग शोधण्यात येतो आहे. पूर्वीच्या विधी विशेषा पेक्षा आता मनोरंजन आणि दिखाव्यावर जास्त लक्ष दिले जात आहे.

'पेरकी जन विवाह पध्दती' या नावाने पेरकी जनसंघम विदर्भने एक पुस्तिका छापुन पेरकी समाजाच्या विवाह पध्दतीची सविस्तर माहिती उपलब्ध करून दिले आहे.

पेरक्यांची दैवते, सण, व्रतवैकल्ये -

पेरक्यांचे मूळदैवत म्हणजे मल्लन्ना. मल्लन्ना म्हणजे मल्लारी-मल्हारी अर्थात शिवशंकर! पेरक्यांचे आदिपुरूष गिरीराजानी (गिरीराजू) श्री शंकराची परम् भक्ती करून त्यांना प्रसन्न करून घेतल्याचे 'मैलारूदेवु' या ग्रंथात सांगितले आहे. याच ग्रंथात पुढे 'पेरिके' लोकांचा तो इष्टदेव होय. असेही म्हटले आहे. म्हणजेच अनादी काळापासून पेरक्यांच्या पूर्वजांनी आपले दैवत-आदि दैवत-कुल, दैवत-इष्ट दैवत म्हणून शंकरालाच मानलेले आहे. आणि आजही ते पेरकी जनांचे मुख्य दैवतच आहे.

पेरक्यांचे दैवत

मल्हार देव व मडिलादेवी
अर्थात
भगवान शिवशंकर व माता पार्वती

पेरक्यांचे दैवत

रेणुकापुत्र परशुराम

'शिव' हे केवळ पेरक्यांचेच दैवत नसून सबंध हिंदूधर्मीय लोकांचे ते आराध्य दैवत आहे. तो सामान्यांनाही आपला वाटतो. किंबहुना तो बहुजनांचा लोकदेव आहे. त्याला या नावारूपात लोक भजतात - पूजतात आणि तो त्यांना प्रसन्नही होतो. अशी दृढ धारणा दिसते. पेरक्यांनी याच शिवाला मल्लन्नाच्या रूपात आपले दैवत मानलेले आहे. ह्याच दैवताला मल्लारी, मल्हारी, मल्हारी-मार्तंड, मैलार, मैराठ अशी ही नावे आहेत. भगवान शिव हा या सर्वांचा केंद्रबिंदू होय. ज्याला आपण आज खंडोबा किंवा मैलार या नावाने ओळखतो. तो शिवाचा मार्तंड भैरवीरूपी अवतार होय. या बद्दलची सविस्तर माहिती या ग्रंथात दिली आहे.

इतर वेळेला मल्लन्नाची (शिवाची) भक्ती, श्रध्देने पूजा तर केल्या जातेच पण विशेष मंगल प्रसंगी मल्लन्नाची पूजा विधीवत करण्याची प्रथा अजूनही पेरकी समाजात रूढ आहे. विवाहप्रसंगी, दिवाळीत आणि इतर महत्वाच्या प्रसंगी केल्या जाते. मल्लन्नाची सट बसविल्या जाते. वऱ्हाडात सटपूजा फार मोठ्या श्रद्धेने केल्या जाते. मल्लन्नाच्या पूजेत भंडाराला (हळदीला) विशेष महत्व आहे. पूजेच्या वेळेला कुळातला प्रत्येक सदस्य आपल्या पूर्वजांचे, कुल-गोत्रांचे नामस्मरण करून भंडारा उधळतो आणि उगे-उगे (घुगे-घुगे) असा आवाज करून देवापुढे नतमस्तक होतो.

'पेरिकान्वयुलू' या ग्रंथात 'रेणुका' पेरकी कुलकन्या असल्याचे सांगीतले आहे. म्हणून पेरकी बांधव तिला पेरक्यांचे आराध्य दैवत मानतात. ती ही कथा आपल्या ग्रंथात विस्तृतपणे आली आहे. रेणुका-यल्लम्मा-एकवीरा म्हणजे आदिशक्तीचेच एक स्वरूप होय. पेरक्यांची जी आराध्य दैवते आहेत, त्यात अनेक ग्रामदेवतांचा ही समावेश आहे. यात देवीच्या अनेक रूपात तिला मान मिळतो. शिवाय प्रत्येक गावात हनुमान आणि माता (पोच्चम्मा) मंदिर असतेच असते. याशिवाय विठ्ठल, विष्णू, गणपती इत्यादी देवानाही पेरकी श्रद्धेने पूजतात, देवाबरोबरच साधू-संताच्या चरणी लीन होतात.... आणि यातून अनेक सणाचाही जन्म होत गेला. व्रत वैकल्ये ही निर्माण झाली. अनेक लोक अत्यंत निष्ठेने श्रध्देने ही व्रत -वैकल्ये करीत असतात. त्या निमित्ताने होणाऱ्या सणात उत्साहाने

पेरक्यांचे कुलदैवत

जेजूरीचा खंडोबा

पेरक्यांची आदिशक्ती

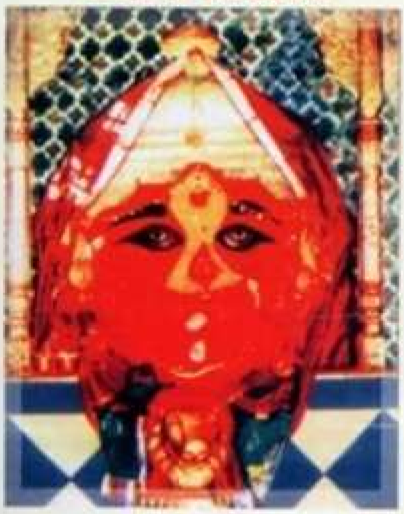

माहुरगडची रेणुकामाता

पेरक्यांची आदिशक्ती

माता चामुण्डेश्वरी, म्हैसूर.

सहभागी होऊन आपला आनंद व्यक्त करतात. पेरक्यांच्या सणामध्ये प्रामुख्याने गुढीपाडवा, दिवाळी, दसरा, होळी, पोळा ब्रतुकम्मा, (बोडेम्मा), मकर संक्रात हे सण उत्साहाने साजरे केल्या जातात. इतरही स्थानीक सणामध्ये पेरक्यांचा सहभाग असतोच.

पेरक्यांची आडनावे -

जवळपास सर्वच समाजामध्ये आडनाव हा कुतूहलाचा विषय आहे. आडनाव म्हणजे काय? ते कसे आले? कुणी आणले? कशासाठी आणले? असे अनेक प्रश्न अजूनही अनेकांच्या मनात उद्‌भवत असतात. मुलांच्या, युवकांच्या मनात तर सातत्याने येत असतात. ते जाणून घेण्याची त्यांची इच्छा त्यांना स्वस्थ बसू देत नाही. त्यांची जिज्ञासा त्यांना हे जाणून घेण्याच्या धडपडीला प्रवृत्त करते आणि त्यातून शोधा-शोध सुरू होते. या शोधातून सापडलेल्या काही नवलकारक गोष्टी ह्या मुळातून वाचनीय आहेतच शिवाय रंजकही आहेत. पहा -

जगातल सर्वात जुनं आडनाव इसवीसनापूर्वी 3050 या सालातलं असल्याचा दावा 'गिनीज बुक ऑफ वर्ल्ड रेकार्ड' न केला आहे. चीन मधल्या राजकीय नेत्यांनी आपण इतरांपेक्षा मोठे आहोत-काही तरी वेगळे आहोत, हे दाखविण्यासाठी आपल्या नेहमीच्या नावा व्यतिरिक्त एक अन्य नाव आपल्या कुटुंबाला-समुहाला देवू लागले. त्या सोबतच इतर धनिक मंडळी आणि इतरांनीही हा कित्ता गिरविण्यास सुरूवात केली, यातून मुख्य नावापुढे-मागे एक अन्य नाव लावू लागले, तेच पुढे आडनाव म्हणून रूढ होत गेले. आणि मग पुढे ते जगभर पसरले.

महाराष्ट्रात तर याची सुरूवात अगदी अलिकडच्या काळातली आहे. पेशवाईचा काळ संपेपर्यंत माणसाला आडनाव लावत नसतच मुळी. फार झाल तर नाव पुढे वडिलांचे नाव लावत असत. उदा. नारायण गणपत, अशोक देवराव, तुकाराम सखाराम इत्यादी. असं म्हटलं तरी काम भागत असे, मात्र पुढे-पुढे संख्या जस-जशी वाढत गेली; तेव्हा व्यक्तीला ओळखण्यासाठी अडचणी येऊ लागल्या, जसे समाजात-गावात एकाच नावाच्या दोन व्यक्ती असल्या तर मग ओळखायचे कसे? उदा. अशोक-अशोक नावाच्या दोन व्यक्ती असल्या तर एक अशोक काशीनाथ चा आणि दुसरा अशोक हा बळीराजाचा यावरून त्यांची ओळख पटवल्या जाऊ लागली आणि ही पध्दत जवळपास 'इंग्रजाचं राज्य सुरू होईपर्यंत अशीच सुरू राहिली. आता मात्र संपूर्ण जगात आणि आपल्या देशातही आडनाव लावण्याची प्रथा सार्वत्रिक झाली. विशेष म्हणजे त्याला सामाजिक आणि कायदेशीर मान्यताही मिळाली आहे.

आडनाव म्हणजे काय?

आडनाव म्हणजे कुलनाम. यालाच उपनाव असेही म्हणतात. भारतातल्या बहुतांश लोक समुहात आडनावे लावण्याची पध्दत आहे. हीच पध्दत पेरकी समाजातही रूढ आहे. भारतीय संस्कृती कोशकारांच्या मते, 'एक कुलातील सर्वांचा निर्देश ज्याने

करता येतो. ते आडनाव होय.' शब्दकोषातील अर्थ व उत्पत्तीनुसार 'अडनाव, आडनाव, उपनाव, घराण्याचे नाव, वंशाचे नाव, कुलनाम, कुळनाम, तसेच तेलुगू भाषेत 'इंटीपेरू' इत्यादी रूपात वापरला जातो. याचाच अर्थ असा की, संपूर्ण कुटुंबाला किंवा त्यात असलेल्या सबंध वंशावळीला दिलेले नाव म्हणजे 'आडनाव' होय. पेरकी समाजातही याच अर्थाने ते रूढ झालेले आहे. पेरकी समाज मुळातच तत्कालीन संयुक्त मद्रास प्रांत आणि आंध्रप्रदेशातून स्थलांतरीत झालेला असल्याने ही आडनावे त्याच अंगाची असल्याचे आढळते. मात्र त्यानंतर ते महाराष्ट्रात आले, त्यावर महाराष्ट्रीय संस्कृती आणि येथील लोक व्यवहाराचा परिणाम होऊन त्याच्यांत अनेक बदल झाले. त्यानुषंगाने त्यांच्या आडनावावरही त्याचे परिणाम दिसून येतात.

सद्या आंध्र व तेलंगणात, आधी आडनाव नंतर व्यक्तीचे नाव लावण्याची पध्दत रूढ आहे. उदा. अंकत रामन्ना, पाईली गोविंदा इत्यादी अलिकडच्या काळात तर ही आडनावे इंग्रजी वर्णाक्षराने लिहिली जात आहेत. उदा. ए. रामन्ना, पी.गोविंदा इत्यादी. दुसरा एक बदल महणजे महाराष्ट्रात आडनावापुढे वार लावल्या जाते. उदा. अंकत-अंकतवार, पाईली-पाईलवार आणि लिहितांना आधी नाव म्हणजे रामन्ना अंकतवार गोविंदा पाईलवार असे लिहिल्या जाते. हेच मराठवाड्यात 'वार' ऐवजी 'वाड' असे लिहिल्या जाते. कंदमवार ऐवजी कंदमवाड.

पेरकी समाजातील आडनावाचे एक कुतूहल म्हणून मी जेव्हा अभ्यास केला तर मला जवळपास एक हजाराच्या आसपास आडनावे आढळले. त्यातील सुमारे 175 आडनावे महाराष्ट्रात प्रचलित आहेत. या 175 आडनावाचा अभ्यास-ती कुठून आली? कशी रूढ झाली? आदिंचा विचार 'आडनावे' या प्रकरणात सविस्तरपणे केला आहे. उदा. शेट्टी वरून आलेले एक आडनाव पाहू या - 'दोराशेट्टी'

(दोराशेट्टी-दोरा+शेट्टी= गोप्पा, उन्नतामैना) दोरा म्हणजे श्रेष्ठी, मोठा माणसू, प्रतिष्ठित, मान्यवर, महाजन, सर साहेब या अर्थाने हा शब्द येतो. पूर्वी पेरकी समाजात व्यापार-समृध्दीच्या दृष्टीने जी घरे प्रतिष्ठित मानल्या गेली, ती नंतर त्याच आडनावाने ओळखल्या जाऊ लागली. कालांतराने याही आडनावात अनेक अपभ्रंश होत गेले - दोरा शेट्टी, दोरा सेट्टी, दोरेशेट्टी, दोरा शेट्टीवारू, दोरशेटवार, दारसेटवार, डोरसेटवार इत्यादी. या आडनावाची घरे प्रामुख्याने नागपूर -कामठी येथे जास्त प्रमाणात आढळतात. 'आडनावे' समजून घेणे अतिशय रंजक आहे. इच्छुकांनी आपल्या ग्रंथाच्या प्रकरण 5 मधून अवलोकन करावे.

पेरक्यांचे गोत्र -

पेरकींच्या आडनावाप्रमाणे त्यांची गोत्रेही विस्मयकारक आहेत. आज आडनावे जशी हिंदू समाज व्यवस्थेचे एक अंगभूत वैशिष्टय आहे, अगदी तसेच गोत्रही खास वैशिष्ट्य मानायला हवे. कारण समाज घटकांना आपल्या आधिपत्याखाली

ठेवण्यासाठी, काही हितैशीनी एक विशेष व्यवस्था निर्माण केल्याचे दिसते. केवळ आठ ऋषींच्या वंशात सर्व समाजाचे वर्गीकरण करून लोकमनावर भावनिक नियंत्रण ठेवण्याचा हा प्रयत्न अत्यंत यशस्वी झाला. लोकांना या ऋषीकुळात स्वतःला गोऊन घेतले ऋषीकुल महणजे आपले कुल मानले. त्यामुळे हे गोत्र पक्के झाले. असे दृढमूल झालेले हे गोत्र म्हणजे नेमके काय?

ऋगवेदात गोत्र शब्द अनेकदा आलेला आहे. तिथे या शब्दाचे गाईचा गोठा, गाईचा कळप, मेघ पर्वत श्रेणी, पर्वत शिखर, किल्ला इत्यादी अनेक अर्थ होतात. काही ठिकाणी गोत्र शब्दाचा, 'समूह' असा अर्थही घेतलेला दिसतो. छांदोभ्योषनिषदात कुटुंब या अर्थी गोत्र शब्द आलेला आहे. यावरूनच पुढे त्याचा 'एकाच वंशातले लोक असा अर्थ केला गेला. बोधायन गोत्र शब्दाचा अर्थ सांगतांना म्हणतात की, विश्वामित्र, जमदग्नी, भारद्वाज, गौतम, अत्री, वशिष्ठ व कश्यप हे सात व आठवा अगस्त्य या ऋषींच्या अपत्यांना गोत्र असे नाव आहे. या मूळ आठ ऋषींना गोत्रकृत, गोत्रकार, वृध्द, स्थविर, किंवा वैश्य असे म्हटलेले आहे. पुन्हा या प्रत्येक ऋषीच्या वंशात काही विशेष कर्तबगार पुरूष निपजले आणि त्यांच्या नावावरूनही त्या वंशाचे नाव प्रसिध्द झाले. मग त्या पुरूषांची गणना मूळ गोत्रातच पण स्वतंत्र गोत्रकर्ता महणून होऊ लागली. त्यांना गोत्रगण म्हणून लागले. अशाप्रकारे मूळ आठ गोत्रे व प्रत्येकाच्या अंतर्गत उत्पन्न झालेल्या गोत्रगणांची ही गोत्रे पक्की होत गेली.

मात्र पेरक्यांची गोत्राची संकल्पना थोडी भिन्न आहे. त्यांनी ऋषीकुळांना गोत्र न मानता स्वतःच्या पूर्वजांची आणि आपल्या आराध्य दैवतांची नावे आपल्या गोत्र नामासाठी वापरली आहेत. पेरक्यांची ही भूमिका, त्या काळात क्रांतीकारक म्हटली पाहिजे. खऱ्या अर्थाने गोत्र शब्द कुटुंबातील एखाद्या शूर, विद्वान किंवा श्रेष्ठ पुरूषाला लावतात आणि नंतर त्यांच्या वंशजाना त्या पुरूषावरून नाव मिळते. याला लौकिक गोत्र असे नाव असून ते क्षत्रियामध्ये असते. पेरक्यांची गोत्र संकल्पना ही द्रविडांच्या 'देवक' सकंल्पनेशी जवळीक साधणारी आहे. देवकाची कल्पना जगात सर्वत्र प्रचलित असल्याचे पंडित मानतात. माहोंजोदडो येथील प्राचीन अवशेषातही देवक पूजेची लक्षणे काही शास्त्रज्ञांना आढळली आहेत.

ऋषी कुळातील गोत्र पध्दती पेरक्यांनी पूर्णपणे नाकारली असून, पेरक्यांची जी गोत्र पध्दती आहे, ती देवकांशी जवळीक साधणारी आहे. या संदर्भात सय्यद सिराजुल हसन लिखित 'निजामाच्या आधिपत्या खालील जाती-जमाती या ग्रंथाच्या व्हॉलूम तीन मध्ये खालील माहिती दिली आहे. 'या जातीत म्हणजे, 'पेरिका जातीत 101 गोत्र आहेत'. उदा. दाखल काही गोत्रांची नाव दिली आहे. 'गोलंदत श्री मालू, श्रीमालू, चुट्टापल्ला मलू, संबू लिंगम मलू, करपुटी मलू, मलकाश्री मल्लू, कामागंटी मलू, उलामलू, अग्राम मलू, आगाश्री मलू, पेदापोरी मलू इत्यादी'. यावरून जी गोत्रनामे आहेत ती ऋषी कुळातील

पेरक्यांचे श्रद्धास्थान

संत ईस्तारी महाराज, किन्ही, नंदपूर

पेरक्यांचे श्रद्धास्थान

श्री संत मारोती महाराज, खाटेश्वर, यवतमाळ

पेरक्यांचे श्रद्धास्थान

संत रामदासजी महाराज, किन्ही, नंदपूर

श्री अनंत महाराज, कोंढुर्ली, श्रीरामपूर

आपल्या कर्तृत्वाने पेरकी समाजाला महाराष्ट्रात ओळख पटवून देणारी व्यक्ती

पेरकी समाजातील धान्य पतपेढीची पहिली
इमारत धानोरा जि. यवतमाळ
संस्थापक : कै.मुत्तन्नाजी पोचन्नाजी करेंवार

कै.मुत्तन्नाजी पोचन्नाजी करेंवार
धानोरा, जि. यवतमाळ.
समाजात पहिल्या सहकारी धान्यपेढीचे जनक

आपल्या कर्तृत्वाने पेरकी समाजाला महाराष्ट्रात ओळख पटवून देणारी व्यक्ती

कै.काशीबाई यल्लप्पा चिंतम (चिंतमवार)
मुंबई.
स्वत:ची बिडी कंपनी स्थापन करून महाराष्ट्र, सौराष्ट्र,
कच्छ पर्यंत व्यवसाय वाढवणारी समाजातील पहिली महिला.

शहिद नागेश्वरराव जिड्डेवार

देशासाठी प्राणार्पण करणाऱ्या
या वीर जवानांस शत् शत् प्रणाम...!
(पांढरकवडा)

कन्या शुल्क व भेट वस्तु

मैल्यागोल्लू -
नख काढण्याचा विधी

कलश पूजन

जिलकरा बेल्लम -
जिरे गुड रोपण.

स्व. गणपतराव महादेव गोविंदवार
स्वर्णसमृध्दि हेल्थ केअर
की ओर से....
9370292882, 8928472234, 9096170712

swami
Dental Clinic
DR. NITIN GUDANKWAR
B.D.S., Dental Surgeon
Are you looking to bring your tooth back in order?
Consult us because
Great braces make great faces
+ 91 91688 37867
+ 91 86682 28045

O&JC
ORTHOCARE & JOINT CLINIC
DR. PRANAV MASATWAR
Location Map
+91 8730923521

श्री आदिशक्ति होमिओ क्लिनिक
Dr. Sumit G. Paydelwar
B.H.M.S., M.D. (Reg.No. 66428)
M. No.: 7276564628

विनस फार्मसी
प्रोप्रा. रोहन भगवंतराव अक्कलवार
जोशी चाईल्ड हॉस्पीटल के पास, तिलकवाडी, दत्ता कॉलेज रोड, यवतमाल

दवाईयाँ
प्रोप्रा. कविता प्रकाश गोविंदवार
स्वर्णसमृध्दी फार्मसी, मिलींद नगर, नागपूर-१७.

H.V. Electricals & Engineering Services
Solar Energy - Today's resource for a Brighter Tomorrow!
Get Solar on your rooftop to get the best energy resource for life!
प्रोप्रा. हेमंत यशवंतराव तामसेटवार
M. : 8329026170, 7038217123, 7219322417
41, Rajat Sankul, Opp. Ganeshpeth Bus Stop, Nagpur

SNEHA BEAUTY PARLOUR
ACADEMY BEAUTY TRAINING
COACHING WITH DIPLOMA
SNEHA PANDHARI SALIGANJEWAR
MAKEUP ARTIST
M. 8208742698
Gurudev Nagar, Sakkardara, Nagpur

पेरकी समाज
ग्रुप वर-वधू
श्री शैलेश बातुलवार, मुख्य संचालक
विनोबा भावे नगर, नागपुर
पेरकी समाज वर वधू ग्रुप सफलतापूर्वक चला रहे हैं।
अनेक शादियां उनके पेरकी समाज वर वधू ग्रुप के माध्यम से जुड़ी है।
अपने लड़के लड़कियों के शादियों के इच्छुक परिवार उनसे संपर्क करें और बायोडाटा भेजे।
9823061592

ROYAL WEDDINGS
ROYAL WEDDING
Prop. PRAKASH D. ANCHILWAR
Opp. All India Radio Kamptee Road, Nagpur

हितेश्री बिछायत केन्द्र
प्रोप्रा. शंकरराव सहदेव गोविंदवार
रमेश शंकरराव ऐचिलवार 9423724466
कॅटरींग लाजवाब
खलाशी लाईन लाला गार्डन, मोहन नगर, नागपूर

9850382887
Anil R. Dumanwar
RAINBOW
Photo Studio
wedding photography
Wani (445304), Dist. yavatmal

प्रोप्रा. शिवम शशी दुम्मनवार
मोहन नगर, नागपूर
Make Your
Wedding Day
Memorable
With Us
We Desi Weddings
7499722480

श्री संत ईस्तारी महाराज
कृषी भांडार
आमच्या येथे सर्व प्रकारचे भाजीपाला, बी-बियाणे, रासायनिक खते व औषधी योग्य भावात मिळेल.
7066696415;8975207788

टिक टॉक चाय
Parlour Franchise Business
तिरंगा स्क्वेयर, सक्करदरा, नागपूर.
अमृततुल्य चाय पार्लर फ्रेन्चाईसी बिजनेस द्वारा 10 से ज्यादा स्थानों पर चाय पार्लर प्रोप्रा.दिपक मधुकर अंगलवार द्वारा शुरू किया गया है।
चाय पार्लर फ्रेन्चाईसी के लिये संपर्क करे
मो. 8208463507
प्रोप्रा. दिपक मधुकर अंगलवार
TIC TOC CHAI Welcome to

यवतमाल पेरकी समाज के पहले पति-पत्नी
डॉक्टरेट, पीएच.डी., कृषि विषय में

डॉ. ज्योती मनीष एमंबडवार
डॉ. मनीष श्रीधरराव एमंबडवार
General Manager in
Transword Furtichem Pvt. Ltd. Mumbai
यवतमाल

स्वर्णसमृद्धि निधि लिमिटेड
96 , मिलींद नगर, बालाभाऊ पेठ, नागपूर-17.

भारत सरकार मान्यता प्राप्त बैंक में अकाउंट खोलने के फायदे।

स्वर्णसमृद्धि निधि लिमिटेड में तीन प्रकार के जमा खाते खोलने की अनुमति है।
१) दैनिक बचत योजना (डेली कलेक्शन खाता)
२) मासिक जमा योजना
३) फिक्स डिपॉजिट

१) दुकानदारों के लिए दैनिक जमा योजना डेली कलेक्शन खाता। जिसमें रोज एजेंट के माध्यम से रूपए जमा किए जा सकते है।
२) मासिक जमा योजना पर10 % से 12 % तक ब्याज।
३) फिक्स डिपॉजिट पर 12 % ब्याज। मंथली इन्कम एक लाख पर एक हजार रूपए मासिक फिक्स डिपॉजिट पर।

स्वर्णसमृद्धि निधि लिमिटेड में दैनिक बचत योजना (डेली कलेक्शन) के खातेदारों को निम्नलिखित फायदे हैं।

- दैनिक बचत डेली कलेक्शन के खातेदारों को ६ महीने जमा पर 3% ब्याज दिया जाता है।
- 12 महीने जमा पर 6% ब्याज दिया जाता है।
- दुकानदारों को दैनिक जमा योजना के अंतर्गत दैनिक ऋण (लोन) योजना भी उपलब्ध है।

दैनिक जमा योजना के खातेदारों को पंद्रह हजार ग्राहकों से जुड़ने का भी सोशल मिडीया द्वारा मौका है। हम दूसरे माध्यमों से पंद्रह हजार ग्राहकों से जुड़े हैं। जिसे हमारी फर्म "विजय हॅन्डलूम" के माध्यम से जिसमें पंद्रह हजार ग्राहकों को उनके नाम की नेमप्लेट मुफ्त में दी गई है।

स्वर्णसमृद्धि निधि लिमिटेड एक स्वास्थ सेवाओं के क्षेत्र में भी सक्रिय है।

- जिसके अंतर्गत पैथालाजी में मार्केट रेट से 50 % छूट। दवाओं और डाक्टरी सलाह में भी छूट। सिनीयर सिटीझन को डॉक्टरी सलाह मुफ्त।
- हेल्थ इंश्योरेंस (ग्रुप) और टर्म इंश्योरेन्स (ग्रुप) में भी डिस्काउंट ऑफर तथा लोन ऑफर उपलब्ध है।
- स्वर्णसमृद्धि निधि लिमिटेड से जुड़े दुकानदारों से भी विशेष छूट डिस्काउंट ऑफर उपलब्ध कराया जाता है।

धन्यवाद

संपर्क
प्रकाश गोविंदवार (डायरेक्टर) 9096170712
रविकुमार काले (डायरेक्टर) 8928472234 , 7769000116

सौजन्य - विजय हॅन्डलूम, कमाल चौक, नागपूर

Prop. Kishor Anandrao Ankatwar
M. 9049844999
Ramna Maruti Sakkardara, Nagpur.

SHREE RAJ MOTORS
Repair and Maintenance of heavy commercial tippers.
(Workshop)
Contact 9850988500
Prakash Anandrao Ankatwar
Ramna Maruti Sakkardara, Nagpur.

माऊली फ्रुट्स

Fresh Fruits
मार्केट पेक्षा कमी दरात घरपोच सेवा
कपिल जिड्डेवार 7414900442

नेशनल आटो पार्ट
तहसील रोड वणी
स्पेअर पार्ट, सेल्स एंड सर्विसेज
श्री राजू रामन्ना अंकतवार M.9822366552

पेरकी समाज बिजनेस ग्रुप से जुड़े हुए व्यवसायी

BUSINESS PROMOTION GROUP

पेरकी समाज बिजनेस ग्रुप से जुड़े हुए व्यवसायी

BUSINESS PROMOTION GROUP

पेरकी समाज बिजनेस ग्रुप से जुड़े हुए व्यवसायी

BUSINESS PROMOTION GROUP

गोविंदवार देताहेत भारतीयत्वाचे प्रमाणपत्र

सभी को भारतीय होने का प्रमाणपत्र दे रहे प्रकाश गोविंदवार

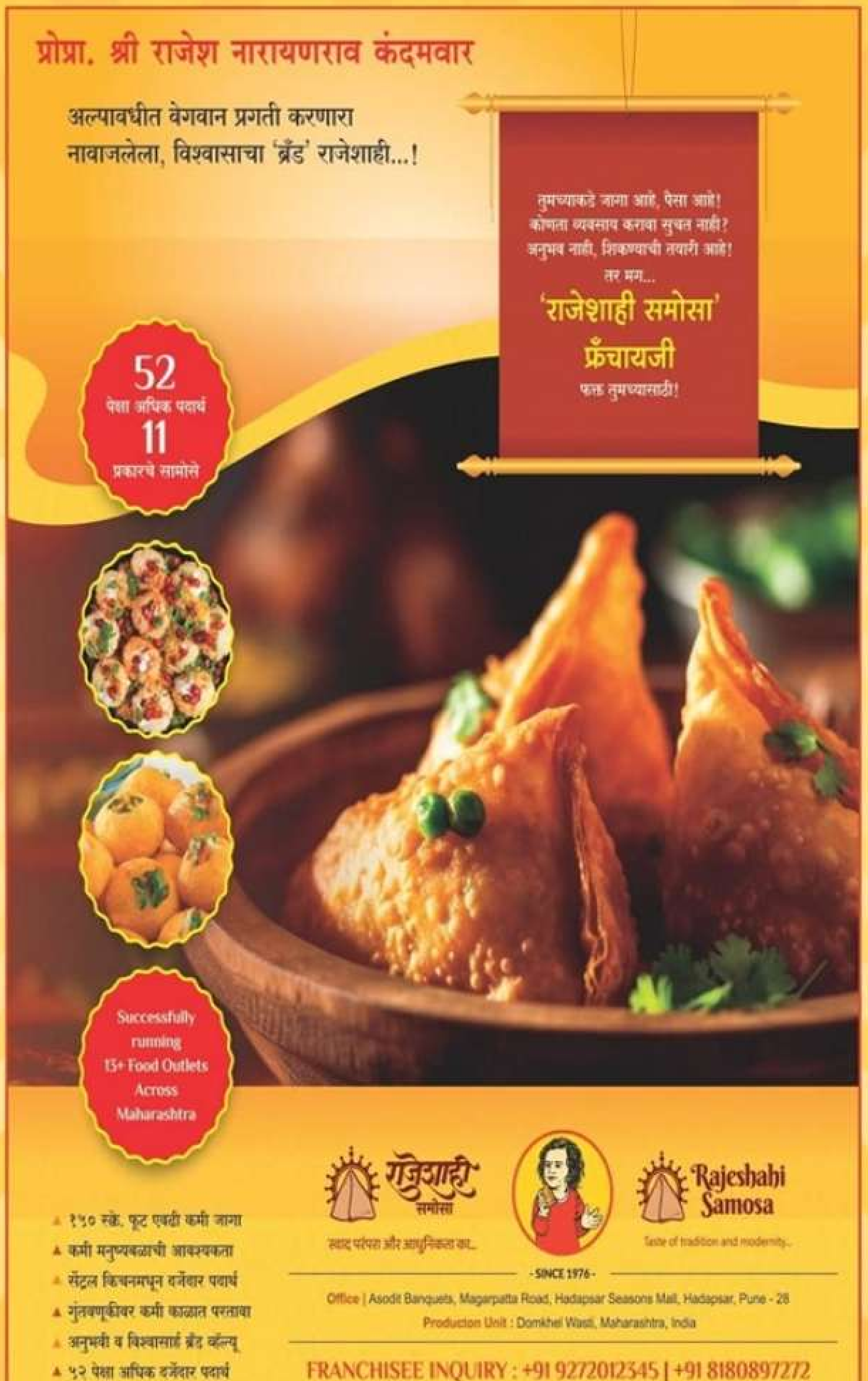

प्रोप्रा. श्री राजेश नारायणराव कंदमवार
अल्पावधीत वेगवान प्रगती करणारा
नावाजलेला, विश्वासाचा 'ब्रँड' राजेशाही...!
तुमच्याकडे जागा आहे, पैसा आहे!
कोणता व्यवसाय करावा सुचत नाही?
अनुभव नाही, शिकण्याची तयारी आहे!
तर मग...
'राजेशाही समोसा'
फ्रँचायजी
फक्त तुमच्यासाठी!
52
पेक्षा अधिक पदार्थ
11
प्रकारचे सामोसे
Successfully running 13+ Food Outlets Across Maharashtra
▲ १५० स्के. फूट एवढी कमी जागा
▲ कमी मनुष्यबळाची आवश्यकता
▲ सेंट्रल किचनमधून दर्जेदार पदार्थ
▲ गुंतवणूकीवर कमी काळात परतावा
▲ अनुभवी व विश्वासार्ह ब्रँड व्हॅल्यू
▲ ५२ पेक्षा अधिक दर्जेदार पदार्थ
राजेशाही समोसा
स्वाद परंपरा और आधुनिकता का...
Rajeshahi Samosa
Taste of tradition and modernity...
- SINCE 1976 -
Office | Asodit Banquets, Magarpatta Road, Hadapsar Seasons Mall, Hadapsar, Pune - 28
Production Unit : Domkhel Wasti, Maharashtra, India
FRANCHISEE INQUIRY : +91 9272012345 | +91 8180897272